EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

कौशल्याधिष्ठित शिक्षा से होंगी आत्मोन्नति से राष्ट्रोन्नति — विकसित भारत का एक लक्ष्य

सोमदत्ता मनोरंजन हिवसे
सहाय्यक प्राध्यापक
V.S.P.M.COLLEGE OF EDUCATION, KATOL,DIST.NAGPUR,

"विकसित भारत 2047" यह लक्ष्य हासिल करने के लिए हमें हमारी मानवता, विश्वशांति और साथ-साथ समग्र विकास करने की आवश्यकता है। मानवता का आदर्श हमें हमारी प्राचीन भारतीय परम्परा में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम में मिलता है। भगवान श्रीराम का चरित्र मानवता का आदर्श स्वरूप है। समर्थ रामदासकृत रामरक्षा स्तोत्र में श्रीराम के अंग-प्रत्यंगों में उनके अभय गुणों का स्वरूप देखने को मिलता है।

शिरो मे राघवः पातु, भालं दशरथात्मजः।
कौसल्येयो दृशो पातु, विश्वामित्रप्रियः श्रुतिः॥

मानवता हमें आत्मोन्नति से राष्ट्रोन्नति की ओर ले जाती है। इसका आदर्श उदाहरण पितृधर्म, मातृधर्म, भ्रातृधर्म, आचारधर्म का पालन करने वाले अवतारी श्रीराम हैं।मानवता का आदर्श निर्माण समाज-जीवन में विचरण करता है। वह श्रीराम का राजधर्म-पालन है। राष्ट्रधर्म इन सभी का आदर्श है। मानव जैसा है, समाज की संस्कृति वैसी ही होती है। शिक्षा-दीक्षा कैसी है, व्यवहार कैसा है — इन सबका परिणाम मानव के विचार एवं व्यवहार में होता है। उसके आंतरिक एवं बाह्य, भौतिक-अभौतिक घटकों का प्रभाव पड़ता है।

भारतीय ज्ञान-परम्परा की पारम्परिक धरोहर हमारे चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद; 108 उपनिषदें; ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक तथा हमारे रामायणवादी, महाभारत आदि महान महाकाव्य हैं। हमारी प्राचीन सभ्यता का मूल मंत्र है—"वसुधैव कुटुम्बकम्।" मूलाधार है। इसके प्रमाण हमें वेदों में मिलते हैं। जैसे—

"आ नो भद्राः कृतवो यन्तु विश्वतः।"— ऋग्वेद

अर्थात— हमारे पास सभी दिशाओं से कल्याणकारी, शुभ एवं श्रेष्ठ विचार आएँ।

यह दृष्टि सृष्टि को मानवीय दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देती है। ऐसी सृष्टि का निर्माण हम कैसे करें, इस पर विचार करना शिक्षा क्षेत्र की प्रमुख जिम्मेदारी है। हमारी समृद्ध ज्ञान-परंपरा हमारी प्राचीन सभ्यता से प्राप्त हुई है। उसे खोजकर, समझकर और उससे परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह परंपरा समस्त जीव-जगत में संबंध स्थापित करती है, सर्वसमावेशक है तथा हमारी मर्यादाएँ निश्चित करती है।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"— ऋग्वेद 9.63.5

अर्थात— सारे विश्व को श्रेष्ठ बनाओ।

Let us make this world a noble place to live in!

यहाँ 'आर्य' शब्द का अर्थ है— श्रेष्ठ, कुलीन, ज्ञानी, सदाचारी, सज्जन व्यक्ति।

अर्थात, समाज में श्रेष्ठ और चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण करना ।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शिक्षा का महत्व

आत्मोन्नति के मार्ग का प्रवेशद्वार शिक्षा है। शिक्षा प्राचीन काल से गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से चलती आ रही है। इसके संबंध में शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित तैत्तिरीय उपनिषद् के अंतर्गत 'शिक्षावल्ली' में गुरु–शिष्य संवाद के माध्यम से आत्मोन्नति हेतु पंचकोश सिद्धांत का परिचय मिलता है, जैसे—

अन्नमय कोश,प्राणमय कोश,मनोमय कोश,विज्ञानमय कोश,आनंदमय कोश

गुरु शिष्य से कहते हैं कि ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से अनुभूति प्राप्त कर आत्मिक तत्व का परिचय करना चाहिए। यही समस्त कार्य–कारण का आधार है, जो मूल ज्ञान स्वरूप है।

'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है—

'उप' अर्थात समीप,'नि' अर्थात निश्चयपूर्वक,'षद्' अर्थात बैठना या स्पष्ट करना।

अर्थात, गुरु के समीप बैठकर निश्चयात्मक, गूढ़ और स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना ही उपनिषद् है। इसमें वेदाध्ययन, विद्याभ्यास और विवेकपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैदिक संपदाओं को समझना आवश्यक है।

वेद का अर्थ है — जानना। 'विद्' धातु से 'वेद' शब्द की उत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ होता है — जो जानता है। जानना और ज्ञान कराना — यही विद्या का उद्देश्य है।

इसी कारण हम ज्ञानी पुरुषों को गुरु, गुरुमहर्षि, ऋषि, आचार्य, महर्षि आदि संबोधनात्मक नामों से संबोधित करते हैं, क्योंकि उन्होंने मानवता के आदर्शों को अपने आचरण में स्थापित करने का प्रयास किया है तथा मानव व्यवहार को संस्कारित एवं संयमित किया है।आयुर्वेद हमारी प्राचीन धरोहर है, जिससे मानव मन एवं आत्मिक क्रियाओं की श्रेष्ठता प्राप्त होती है। इसके नित्य अभ्यास से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य की सिद्धि संभव है।

पतंजलि मुनि ने 'अथ योगानुशासनम्' नामक ग्रंथ में विरचित योगसूत्रों के माध्यम से अष्टांग योग का मार्ग मानवता की आत्मोन्नति के लिए बताया है।

अष्टांग योग के आठ अंग इस प्रकार हैं—

यम,नियम,आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार,धारणा,ध्यान,समाधि

अष्टांग योग का यह परिचय आधुनिक जगत तक पहुँचना चाहिए। योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने पतंजलि योगपीठ के माध्यम से देश-विदेश में योग का व्यापक प्रचार-प्रसार किया है। आज योग भारतीय सांस्कृतिक ही नहीं, बल्कि आर्थिक समृद्धि का भी आधार बन चुका है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, 21 जून को, भारत की ओर से विश्व मंच पर स्थापित किया गया, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से जुड़ा हुआ है। यह हमारी प्राचीन परंपरा से प्राप्त अवधारणा है, जिससे मानव संबंधों में सामंजस्य स्थापित होता है। यह विकसित भारत की एक उपलब्धि भी है और साथ ही एक आह्वान भी है। हमें पूरे विश्व में योग का प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों को तैयार करना होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा से ही योगासन, पाठ्यक्रम और व्यावहारिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाए।

योगासन आज मानवता के उत्थान का आधार बन चुके हैं।

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।"

अर्थात् — शरीर ही धर्म के आचरण का प्रथम साधन है।

समस्त विश्व के स्वास्थ्य की चिंता करना तथा साथ-साथ प्राकृतिक उपचार पद्धतियों को बढ़ावा देना — यही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का लक्ष्य है। हमारे प्राकृतिक एवं नैतिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन करते हुए, उनका शोषण न करके विवेकपूर्ण दोहन किया जाना चाहिए। इस विषय में हमारी अवधारणाएँ स्पष्ट रूप से योग-शिक्षण विषय के पाठ्यक्रम में

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

सम्मिलित होनी चाहिए। तभी यह दृष्टि एवं दीर्घकालिक राष्ट्रीय उन्नति के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। ओंकारादि प्राणायाम के अभ्यास से मन को स्थिर किया जा सकता है। इसका नित्य अभ्यास एक साधना है। साधना करने से हमारी आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक उन्नति संभव होती है। महाभारत काल में जब मानवता के मूल्यों का हनन हुआ, तब भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेकर अपनी लीलाओं और पराक्रम के माध्यम से मानव मूल्यों की पुनः स्थापना की। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। गीता का उपदेश श्रीकृष्ण अर्जुन को देते हैं तथा मित्र के रूप में ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग की शिक्षा प्रदान करते हैं। आज के सामाजिक जीवन में शिक्षा प्रदान करने वाले स्थान पर विविध संगणकीय साधन जैसे — गूगल, चैट-जीपीटी, यूट्यूब, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आदि उपलब्ध हैं। परंतु ये साधन मानव मन में अंतःप्रेरणा एवं संस्कार निर्माण करने में प्रायः असफल सिद्ध होते हैं। यहाँ विचारों के साथ अनुभवी मार्गदर्शक के अनुभव की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। स्वामी विवेकानंद जी ने जब भारतीय वेदांत दर्शन एवं योगविज्ञान का संदेश सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित किया, तब उन्होंने कहा था —

"शिक्षा आत्मा की अंतर्निहित पूर्णता का प्रकटीकरण है।"

उनका यह भी मत था कि श्रीमद्भगवद्गीता में जीवन से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर निहित हैं। आदर्श स्थापित करने के लिए कर्मयोगी से लेकर ध्यानयोगी बनने की अभिलाषा के साथ स्वयं प्रयास करने की आवश्यकता है। गीता में कहा गया है—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥"(गीता 3:21)

अर्थात् — श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करता है, अन्य मनुष्य भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो मानक स्थापित करता है, वही समस्त समाज द्वारा अनुसरणीय बन जाता है

श्रीमद्भगवद्गीता का सोलहवाँ अध्याय 'दैवासुरसम्पद्विभाग योग' कहलाता है।

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का ज्ञान प्रदान करते हैं। दैवी संपदा से युक्त गुणों का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं—

"अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥"
"अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥"
"तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत॥" (अध्याय 16, श्लोक 1–3)

अर्थात् — अभय, अंतःकरण की शुद्धता, ज्ञानयोग में स्थिरता, दान, इंद्रिय-निग्रह, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शांति, चुगली न करना, करुणा, लोभ का अभाव, कोमलता, लज्जा, चंचलता का अभाव, तेज, क्षमा, धैर्य, शौच, द्वेष का अभाव तथा अभिमान न होना — ये सभी दैवी संपदा के गुण हैं।

ये दैवी प्रवृत्तियाँ मानव को श्रेष्ठ बनाती हैं और उसे मुक्ति की ओर अग्रसर करती हैं।

गीता में कहा गया है —

"समत्वं योग उच्यते।"

अर्थात् समभाव ही योग है।

योगसूत्रों में कहा गया है —

"स्थिरसुखमासनम्।"

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

अर्थात् जो आसन स्थिर और सुखपूर्वक किया जाए, वही आसन है।

ये सभी उक्तियाँ हमें शांति, संतुलन और साधना का संदेश देती हैं। विश्व के कल्याण के लिए साधना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

"विश्वमंगल साधना के हम हैं मौन पुजारी,
आराधक हैं विश्वशांति के,अक्षय टेक हमारी॥"

स्मृति का स्तर सभी प्राणिमात्र में विद्यमान होता है, किंतु मानव को विशेष रूप से अलौकिक बुद्धि-लब्धि प्राप्त हुई है। इसी कारण मानव चिंतन, विवेक और आध्यात्मिक उन्नति की क्षमता से युक्त है। हर प्रगति एवं विकास की एक प्रक्रिया होती है। विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं और विकास एक क्रमबद्ध गति है। यह क्रमबद्ध विकास हमें अधिगमशास्त्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अधिगम के सूत्रों पर विचार करने से हमें हमारी भौतिक एवं अभौतिक क्रियाओं के संकेत प्राप्त होते हैं। विमर्शात्मक विचार मानव ही कर सकता है; न कि चैट जी.पी.टी,और ए.आई । विमर्श करने की क्षमता का मूल कारण मानवीय भावनाएँ हैं, जो मानव व्यवहार से गहराई से जुड़ी होती हैं। हर व्यक्ति भावनाएँ रखता है, परंतु भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न विचार-शैली के रूप में दिखाई देती है। मानव विकास की गति भी व्यक्ति-व्यक्ति में अलग-अलग होती है। विकास की प्रक्रिया में संसाधनों की उपलब्धता मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। भारत की भूमि अक्षय प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। यह देवभूमि है, पुण्यभूमि है। जल, जमीन, जंगल, जानवर और जन—इन सभी दृष्टियों से भारत समृद्ध है। भारत एक युवा देश है। वैचारिक समृद्धि प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में निरंतर दिखाई देती है। आर्यभट्ट, पाणिनि, पतंजलि, कालिदास, वेदव्यास, वाल्मीकि, भरतमुनि जैसे प्राचीन मनीषियों से लेकर डॉ. विजय भटकर, डॉ. एच. डी. देवे जैसे आधुनिक शिक्षाविद् भारत को समृद्ध और सशक्त बनाने में निरंतर योगदान दे रहे हैं।डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे 'मिसाइल मैन', अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान जननायक और नानाजी देशमुख जैसे कृषि एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले आदर्श व्यक्तित्व भारत की प्रेरणास्रोत हैं। आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। शिक्षा के साथ-साथ सर्वसमावेशी शिक्षा को भी शिक्षण-प्रणाली में समाहित किया गया है।'लोकल से ग्लोबल' के माध्यम से कौशलाधारित व्यवसायों में वृद्धि हो रही है। भारत में खादी उद्योग, मधुमक्खी पालन उद्योग, सूत काताई, योग, सहकार उद्योग, जलविद्युत निर्माण, पवन ऊर्जा, तापीय ऊर्जा तथा सौर ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में उद्योगों का तेजी से विकास हो रहा है । विश्व की दृष्टि भारत के भाग्योदय की ओर स्थिर होती दिखाई दे रही है। विकसित और विकासशील—दोनों प्रकार के देश भारत से लाभ प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। विकसित भारत 2047 यह होना तय है। हमारी शिक्षा-दीक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत का भविष्य हमारी भारतीय ज्ञान-परंपरा में निहित है। हमें अपनी प्राचीन सभ्यताओं और सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा-प्रणाली में सम्मिलित करने की आवश्यकता है। तभी भारत श्रेष्ठ बनेगा और विश्वगुरु बनेग ।

"बलसागर भारत होवो,
विश्वात शोभूनी राहो ।"